कृत्या साधना

आज मैं आज आपके सामने एक ऐसी साधना विधि रखना चाहता हूं, जो अत्यन्त तीक्ष्ण, दुर्धर्ष, शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करने वाली, ब्रह्मास्त्र से भी ज्यादा तीव्र, पूरे ब्रह्माण्ड को मुट्ठी में बांध कर रखने वाली और गेंद की तरह उछालने वाली अद्भुत तथा तेजस्वी साधना है, जिसे 'कृत्या साधना' कहते हैं।

इस साधना के बारे में सिर्फ मैं ही नहीं, अपितु सभी ऋषियों ने इस बात को स्वीकार किया है, कि इससे ज्यादा तीक्ष्ण, इससे ज्यादा प्रहार करने वाली, शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाली, समग्र विजयदात्री और अपने व्यक्तित्व को सर्वोच्च स्थिति तक पहुंचाने वाली कोई अन्य साधना नहीं है, महाविद्या साधनाएं भी इसके सामने अत्यन्त बौनी हैं, तुच्छ हैं, नगण्य हैं, क्योंकि कृत्या साधना के मुकाबले की कोई साधना ही नहीं है।

यह एक तीक्ष्ण साधना है, अतः इसकी साधना विधि भी थोड़ी सी कठिन है, पर कठिन का तात्पर्य यह नहीं है, कि कोई व्यक्ति इसकी साधना कर ही नहीं सके, क्योंकि यदि ऐसा होता, तो मैं इन कागजों पर इस साधना विधि को नहीं देता।

मैं चाहता हूं, कि साधक अब आगे बढ़ करके ऐसी तीक्ष्ण साधनाओं को अपनायें, जो अपने आपमें अद्वितीय हो और जिनको सम्पन्न करने पर आंखों से ऐसी ज्वाला निकले, कि सामने खड़ा शत्रु भस्म हो जाय, मुख में ऐसी वाक् शक्ति पैदा हो जाय, कि सामने वाला नतमस्तक हो जाय, व्यक्तित्व में इतना निखार आ जाय, कि सामने वाला अपने आपको बौना अनुभव करने लगे और एक ऐसी रक्षक शक्ति उसके पास हो, जो चौबीसों घण्टे, प्रतिक्षण उसकी और उसके परिवार की रक्षा कर सके।

इसलिए यह साधना अपने आपमें विलक्षण होते हुए भी अत्यन्त सरल साधना है और पूर्णतः मांत्रोक्त साधना है, कोई तंत्र विधा नहीं है, कोई तांत्रिक साधना नहीं है। इसमें ऐसी कोई बात नहीं है, कि इससे गृहस्थ व्यक्ति पर कोई विपरीत प्रभाव पड़ सके।

कई लोग इस साधना को कठिन और भयावह समझते हैं, कि सामान्य व्यक्ति को यह साधना नहीं करनी चाहिए; परन्तु ऐसी बात नहीं है, जब आपके सामने मार्गदर्शक के रूप में चैतन्य एवं शक्ति सम्पन्न गुरु विद्यमान हैं, तो फिर भय किस बात का!

यह साधना तो कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है, यद्यपि इसके नियम थोड़े से कठोर हो सकते हैं, परन्तु मनुष्य जब हिमालय पर चढ़ सकता है, समुद्र को लांघ सकता है, तो वह सब कुछ कर सकता है और यदि उसको यह दैवीय बल प्राप्त हो जाय, तो उसका मुकाबला फिर पूरा विश्व भी मिल कर नहीं कर सकता।

यह अत्यन्त गोपनीय साधना है, मात्र गुरु मुख से, गुरु परम्परा से प्राप्त की जाती रही है। पात्रता के अभाव में गुरुओं ने इसे गुप्त रखा है, इसीलिए वहुत कम ग्रंथों में इसकी साधना विधि का उल्लेख है।

मगर पूज्य गुरुदेव को अपने शिष्यों पर विश्वास है, गर्व है, क्योंकि वे चैतन्यता पूर्ण हैं, प्रज्ञा पुरुष हैं, अपने आपमें दुर्धर्ष हैं, वे जो भी आज्ञा देते हैं, उसे आप हर हालत में पूरा कर लेते हैं और पूर्णता के साथ आगे बढ़ने में सक्षम हैं।

इसीलिए मैं इस साधना को आगे के पत्रों पर रख रहा हूं, जिससे कि आने वाली पीढ़ियां इस कृत्या साधना से लाभ उठा सकें, वर्तमान पीढ़ी अपने गुरु के चरणों में वैठ कर इस साधना को सिद्ध कर सके और विश्व को वता सके, कि अद्वितीयता क्या होती है; वता सके, कि कोई ऐसी शक्ति भी है, जो उसके पास प्रतिक्षण रह कर उसकी रक्षा कर सकती है; एक ऐसी भी शक्ति है, जो पूरे व्रह्माण्ड को भेद सकती है; एक ऐसी भी शक्ति है, जो अपने आपमें किसी व्यक्तित्व को वहुत ऊंचाई पर उठा सकती है; एक ऐसी भी शक्ति है, जिसके वल पर वह व्रह्माण्ड में 'युग पुरुष' कहला सकता है।

इसीलिए इस साधना को कोई भी व्यक्ति, कोई भी स्त्री, कोई भी पुरुष सम्पन्न कर सकता है – और करना चाहिए, क्योंकि यदि समुद्र में कूदेंगे ही नहीं, तो तैरना आयेगा ही नहीं; यदि डरे हुए रहेंगे, तो जीवन में निर्भयता आ ही नहीं सकती; यदि यमराज से आंख मिलाने की ताकत नहीं आयेगी, तो मौत से हमेशा घवराते रहेंगे; यदि आपमें ताकत और क्षमता, पौरुषता और जोश, जवानी और साहस, प्राणों में स्पन्दन और चेतना नहीं आयेगी, तो आप पुरुष वन ही नहीं सकते।

इसलिए हिम्मत करके इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए और इसलिए करना चाहिए, कि आप वता सकें इस देश को और विश्व को, कि मैं क्या हूं और आज भी हमारी साधनाएं श्रेष्ठ हैं, अद्वितीय हैं।

इन साधनाओं के माध्यम से, इस दैविक वल के माध्यम से, इस शक्ति के माध्यम से विश्व विजेता वना जा सकता है और किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर पर पहुंच कर अपना नाम जगमगाया जा सकता है।

आने वाले युग में आपका नाम स्वर्णाक्षरों में, सोने की कलम से लिखा जाय, आपके ललाट पर दिप्-दिप् करती हुई तेजस्विता बनी रह सके, आपकी आंखों में चमक, तेज, प्रभाव और पूर्णता छाई रह सके और आप वह सब कुछ कर सकें, जो आपकी इच्छा, भावना, श्रेष्ठता और दिव्यता है।

. . . और यदि अव भी नहीं किया, तो फिर जीवन में कभी कर भी नहीं सकेंगे, इसलिए 12.10.96 (किसी भी माह की अमावस्या को), जो कि इस साधना को करने के लिए अद्वितीय हैं, इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए। इस साधना को सम्पन्न करने के वाद सभी प्रकार के भय स्वतः समाप्त हो जाते हैं, किसी के द्वारा किया गया कोई भी प्रयोग उस पर प्रभावी नहीं हो सकता, साधक के व्यक्तित्व में विविधता तथा वैचित्र्य ही इस साधना की विशेषता है।

यह साधना अपने आपमें तेजस्विता प्रदायक साधना है और तेजस्विता को प्राप्त करने के वाद भय

रहता ही नहीं, जहां तेजस्विता है, वहां भय रह ही नहीं सकता; क्योंकि जहां भय रहता है, वहां बड़प्पन नहीं आ सकता, वहां पूर्णता नहीं आ सकती, वहां श्रेष्ठता नहीं आ सकती, वहां दिव्यता नहीं आ सकती।

इसलिए आप निर्भय होकर इस साधना को सम्पन्न करें, क्योंकि यह साधना आपके लिए है और पहली बार सौ वर्षों के इतिहास में हिन्दी में इतनी सरल विधि में इन कागजों में, इन पत्रों में इस कृत्या प्रयोग को लिखा जा रहा है। यह परम पूज्य गुरुदेव

की असीम कृपा है, कि उन्होंने मुझे इस साधना को सम्पन्न करवाया, यह उनकी असीम कृपा है, कि इस साधना को मैंने अनुभव किया और यह मेरा सौभाग्य है, कि उन्होंने मुझे आज्ञा दी, कि मैं इस साधना को लिख कर पत्रिका परिवार को दूं और इस साधना को जन-जन तक, प्रत्येक गुरु भाई तक पहुंचाऊं। इसीलिए इस साधना को आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं –

साधनात्मक नियम

इस साधना के वारह नियम हैं, जिनका पालन करना साधक के लिए आवश्यक है –

- इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्व **'कृत्या दीक्षा'** लेनी अत्यन्त आवश्यक है, चाहे आप इसे फोटो के माध्यम से लें या व्यक्तिगत रूप से लें या आप अपना नाम लिख कर भेज दें और उस नाम के माध्यम से भी आप गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
- इस साधना के प्रारम्भ में और अंत में गुरु पूजन आवश्यक है। इस साधना में बाजोट पर काला वस्त्र बिछाकर उस पर जहां एक ओर **'कृत्या यंत्र'** स्थापित होगा, वहीं दूसरी तरफ **'गुरु यंत्र'** भी स्थापित होगा और इन दोनों के बीच में **'गुरु चित्र'** स्थापित होगा, जिससे कि गुरु आपके जीवन की रक्षा कर सकें, साधना में सफलता दे सकें और किसी भी प्रकार का भय, डर, चिन्ता, तकलीफ, तनाव और मन में किसी प्रकार की दुविधा नहीं रहे।
- यह साधना 21 दिन की है और 21 दिन तक आप नित्य रात्रि को 11 बजे से 3 बजे के बीच इस साधना को सम्पन्न करेंगे, यही समय इसके लिए उपयुक्त है।
- इस साधना में केवल **'कृत्या माला'** का ही प्रयोग किया जाता है, अन्य किसी दूसरी माला से इस साधना को सम्पन्न नहीं किया जा सकता।
- इस साधना को सम्पन्न करते समय भूमि पर सोयें अर्थात् जहां पर आप यह साधना सम्पन्न करें, वहीं पर रात्रि को लेट जायें।
- साधना काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें, स्त्री गमन, स्त्री चिन्तन सर्वथा वर्जित है।
- आपके साधना कक्ष में दूसरा कोई व्यक्ति प्रवेश नहीं करे और यदि एक ही कमरा है, तो साधना स्थान के चारों तरफ पर्दा टांग कर कक्ष का रूप दे दें, जिससे कि आपकी पत्नी, आपका पुत्र या पुत्री या अन्य कोई भी उसमें प्रवेश नहीं कर सके।
- साधना काल में किसी प्रकार का कोई भय, डर, तनाव या विषमता पैदा नहीं होती, कोई राक्षस, भूत, पिशाच या चुड़ैल आदि आपके सामने नहीं आती, जो आपको डराये या

धमकाये, लेकिन इस बात का ध्यान रखें, कि जो कच्चे मन वाले हैं, जो डरपोक हैं, जो वृद्ध हैं, जिनका हृदय कमजोर है या कभी हार्ट अटैक हो चुका है, वे इस साधना को सम्पन्न नहीं करें। यह साधना एक तीक्ष्ण साधना है, अतः शरीर में तेजस्विता पैदा होने से शरीर गर्म रहता है। अतः जब आपका शरीर तथा मन स्वस्थ हो, तब आप इस साधना को सम्पन्न करें। यों तो इस संसार में कोई भी वृद्ध होता ही नहीं, यह तो शरीर की स्थिति है, जो मन में समा जाती है और धीरे-धीरे मन का यह भ्रम इतना घनीभूत हो जाता है, कि वास्तव में हमारा हृदय कमजोर हो जाता है।

- इस साधना में 'काला आसन' बिछायें, 'काली धोती' पहनें तथा 'गुरु पीताम्बर' धारण करें। दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठें और सामने तेल का दीपक लगायें, तेल कोई भी हो सकता है।
- साधना काल में आप यात्रा सम्पन्न न करें, एक ही स्थान पर इस साधना को सम्पन्न करें।
- साधना काल में आप असत्य नहीं बोलें और यथासम्भव अपने आपमें संयत और शांत रहें। यदि आपको साधना में कोई अनुभव हो रहा हो, तो उसे गुप्त रखें, किसी को भी बतावें नहीं, सुनाय़ें नहीं, न ही पत्नी को, पुत्र को या किसी को भी।
- साधना काल में एक समय भोजन करें, पर उसमें भी किसी प्रकार से मांसाहार का उपयोग नहीं करें, शराब-सिगरेट नहीं पियें और अपने आपमें स्वच्छ मन, स्वच्छ शरीर और पूर्ण श्रद्धा और भावना के साथ इस साधना को सम्पन्न करें।

इन नियमों का पालन आवश्यक है ही, मगर साथ ही साथ यह बात भी है, कि यदि आपमें श्रद्धा है, समर्पण है, गुरु के प्रति आदर है, सम्मान है, भावना है और साधना के प्रति चेतना है, तभी आप इस साधना को सम्पन्न करें, अन्यथा यदि आप अश्रद्धावान हैं, तो आप इस साधना को सम्पन्न नहीं करें।

इस साधना को कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है, मगर यह बात निश्चित है, कि इस साधना की वजह से आपके शरीर को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंच सकता, यदि आपके मन में भय है, तो यह अलग बात हैं; बीमार हैं, तो यह बात अलग है; डॉक्टर आपको इतनी रात्रि तक जगने की सलाह नहीं दे रहा हो, तो आपको यह साधना नहीं करनी चाहिए और यदि आपको अपने ऊपर विश्वास नहीं हो, तो भी इस साधना को समपन्न नहीं करना चाहिए।

यह साधना एक तीक्ष्ण साधना होते हुए भी अपने आपमें अत्यन्त सरल साधना है और यह जरूरी नहीं है,
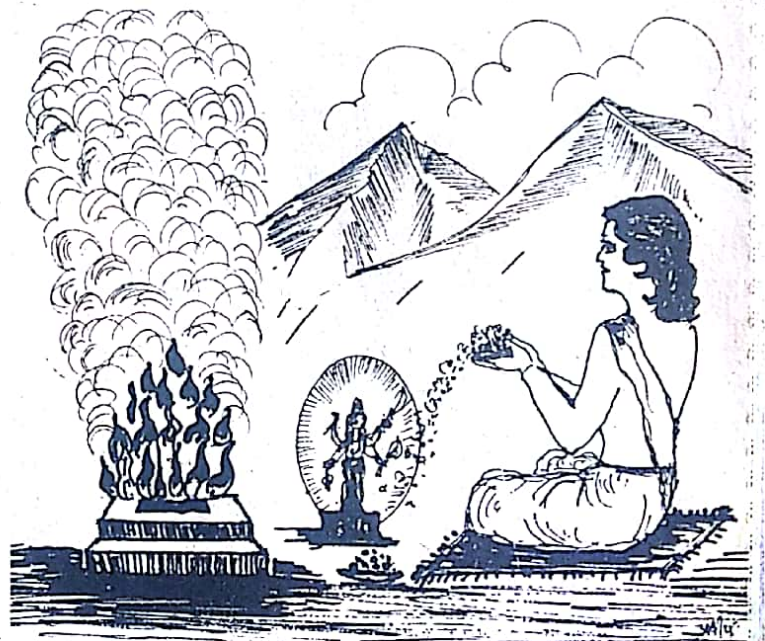
कि पहली बार में ही यह साधना सिद्ध हो जाय, आपको दूसरी, तीसरी, चौथी, आठवीं बार भी इस साधना की पुनरावृत्ति करनी पड़ सकती है, क्योंकि कृत्या जैसी अद्वितीय सिद्धि एक बार में मिल जाय, तो सौभाग्य है; यदि नहीं मिले, तो घबराने की जरूरत नहीं है, पुनः इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए।

साधना विधान

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व स्नान आदि से निवृत्त हो लें, फिर काली धोती पहन कर गुरु पीताम्वर ओढ़ें, शरीर पर कोई भी सिला वस्त्र नहीं होना चाहिए। काला आसन विछाकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके वैठें, सामने चौकी रखें, उस पर काला वस्त्र विछा लें। एक लोटे में जल भर कर सामने रखें, धूप-दीप जला लें। सामने रखे लोटे के जल में थोड़ा सा अक्षत (चावल) तथा पुष्प डालें, फिर लोटे के ऊपर दाहिना हाथ रख कर निम्न मंत्र को पढ़ें –

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीत्॥

फिर लोटे के उस जल को पंचपात्र में डालकर अपने ऊपर जल छिड़कें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

फिर वायें हाथ में जल लेकर दायें हाथ से ढक कर इस मंत्र को पढ़ें –

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

हाथ में लिए जल को सभी दिशाओं में छिड़क दें।

दायें हाथ में जल लेकर संकल्प करें –

अमुक गोत्रोत्पन्नः (अपना गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (नाम बोलें) अस्मिन शुभ मुहूर्ते गुरुकृपया यथा मिलितोपचारैः कृत्या साधनां करिष्ये॥

जल भूमि पर छोड़ दें।

अव सामने स्थापित गुरु चित्र एवं गुरु यंत्र का पूजन करें।

दोनों हाथ जोड़ें –

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तः वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिमानस्य यः परः परमेश्वरः॥

इसके वाद यंत्र को शुद्ध जल से धोकर पोंछ लें, कुंकुम का तिलक करें व अक्षत, पुष्प चढ़ायें। पुनः मानसिक रूप से साधना में सफलता प्राप्ति के लिए गुरुदेव से प्रार्थना कर 5 माला गुरु मंत्र का जप करें।

फिर कृत्या यंत्र को किसी पात्र में लेकर स्नान करावें, फिर एक तांवे या स्टील की प्लेट लेकर उस पर कुंकुम से 'कृं' लिख कर उसमें यंत्र को स्थापित करें, यंत्र पर तिलक करें तथा अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें। इसके वाद कृत्या यंत्र के चारों तरफ चारों दिशाओं में तेल के चार दीपक जला कर रखें, ये चारों दीपक पूरे जप काल तक जलते रहने चाहिए।

फिर कृत्या माला से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें –

मंत्र

॥ ॐ क्लीं क्लीं कृत्या सिद्धिं
शत्रून् मोहय उच्चाटय मारय आज्ञां
पालय पालय फट्॥

प्रतिदिन जप समाप्ति के वाद पुनः 5 माला गुरु मंत्र जप करें।

अन्तिम दिन जप समाप्ति के बाद कृत्या अत्यन्त सौम्य रूप में सामने आती है और वचन देती है – **"मैं जीवन भर आपके साथ रहूंगी, आपकी आज्ञा का पालन करूंगी और आपका कितना भी कठिन कार्य हो, मैं उस कार्य को पूरा करूंगी।'**

जव वह ऐसा कहे, तो आप उस वचन को स्वीकार कर लें और कहें – "मैं तुम्हें जो आज्ञा दूंगा, तुम्हें उस आज्ञा का पालन करना पड़ेगा, चाहे वह भौतिक, आध्यात्मिक या आर्थिक किसी भी प्रकार की आज्ञा दूं, उसका तुम्हें पालन करना पड़ेगा ही।" – ऐसा वचन प्राप्त होने पर ही यह साधना सिद्ध समझी जाती है।

साधना सिद्ध होने के वाद माला और यंत्र को किसी जनशून्य स्थान में ले जाकर गाड़ दें अथवा नदी या तालाव के जल में प्रवाहित कर दें एवं अपने गुरुदेव से मिल कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

मुझे विश्वास है, कि आपमें से प्रत्येक साधक इस साधना में भाग लेगा ही, क्योंकि यह साधना साधक को अद्वितीय वना देती है। यदि आप इसका लाभ उठायेंगे, तो यह आपका सौभाग्य होगा और मुझे विश्वास है, कि आप इसका लाभ उठायेंगे ही।

न्यौछावर – 660/-